सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग

शमीम भाटी

सीखने की प्रक्रिया केवल शिक्षक और विद्यार्थी के बीच तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह एक सामाजिक अनुभव है जिसमें विद्यार्थी आपस में संवाद करके, और एक दूसरे को देखकर सीखते हैं। वे नई अवधारणाओं को अधिक प्रभावी रूप से आत्मसात् कर पाते हैं। इस प्रक्रिया को पीयर लर्निंग या सहपाठी शिक्षण कहा जाता है। यह तरीक़ा न केवल सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण क्षमता और सीखने में आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और *एनसीएफ़-एसई 2023* उपर्युक्त विचार को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का एक हिस्सा मानते हुए अनुशंसा करते है कि सीखने की प्रक्रिया को खोज-आधारित, समूह-आधारित और प्रयोगात्मक बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहें, बल्कि वास्तविक दुनिया से जुड़कर व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करें।

कुछ शिक्षक एक शान्त कक्षा को आदर्श व अनुशासित कक्षा का पर्याय मानते हैं जहाँ विद्यार्थी एक दूसरे से कोई बात न करें, बल्कि चुपचाप अपना काम करते रहें। जबकि वायगोत्स्की का सामाजिक सीखने का सिद्धान्त बताता है कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें बातचीत, सहयोग और मार्गदर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पीयर लर्निंग में बातचीत व सहयोग के ख़ूब मौक़े मिलते हैं।

लेख में कुछ उदाहरणों से यह समझने की कोशिश करेंगे कि पीयर लर्निंग विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में किस तरह सहायक होती है, और उनके सीखने की प्रक्रिया के दौरान क्या कुछ सकारात्मक परिस्थितियाँ बनती हैं?

मोतियों की गिनती

मैंने कक्षा 1 से 3 के विद्यार्थियों को कुछ मोती दिए, और बारी-बारी से गिनने को कहा। सबसे पहले शुभम ने गिना और बताया कि 8 (उसने एक मोती को दो बार गिना था)। स्नेहा

चित्र 1: साथ मिलकर लिखते-पढ़ते, एक दूसरे से सीखते विद्यार्थी

बहुत छोटी थी लेकिन वह भी गिनना चाहती थी, उसे मौक़ा भी दिया गया। उसने सब मोतियों को उँगली से बार-बार छुआ और 3 बोला। गौरव ने गिनकर बताया कि कुल 9 मोती हैं। इसके बाद अंजना ने गिना और बताया कि 6 हैं। उसने मोतियों को बेतरतीब रखकर गिना था। इसके बाद जीविका ने एक-एक कर सब मोतियों को अलग करते हुए गिनकर बताया कि 7 मोती हैं। जीविका ने प्रत्येक मोती को गिना था और सही संख्या बताई थी।

> **विद्यार्थी जब अपने सहपाठियों से सीखते हैं, वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, और दूसरों के विचारों को समझना सीखते हैं।**

अब मैंने एक सवाल रखा कि सब विद्यार्थियों की गिनती अलग-अलग क्यों आ रही है। विद्यार्थी मुस्कुराने लगे। मैंने कहा, "चलो एक बार और गिनकर देख लेते हैं।" गिनने की बारी इस बार भी उसी क्रम में दी गई। लेकिन विद्यार्थियों ने अपने गिनने के तरीक़े में कुछ बदलाव किए। शुभम ने मोतियों को एक-एक कर उठाते हुए गिनना शुरू किया। जब 5 मोती हो गए, और उसे अपने हाथ में मोती सँभालना मुश्किल हो गया, उसने उन मोतियों को अलग रखकर बाक़ी के मोती गिने। इस बार उसने कहा कि 7 मोती हैं। स्नेहा ने भी गिनने के लिए मोतियों को उठाकर हाथ में रखना शुरू किया, और बताया कि 7 मोती हैं। अंजना ने अपना पुराना तरीक़ा ही अपनाया और बोली कि 12 मोती हैं।

हालाँकि दूसरी बार गिनने पर भी जीविका के अलावा दो ही विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया। उसमें भी स्नेहा ने केवल सुनकर 7 बोला था, लेकिन उसने अपने गिनने के तरीक़े में बदलाव किया था और गिने हुए मोतियों को अलग करने की कोशिश की। इसी तरह शुभम ने जीविका को गिनते देखकर गिने जा चुके मोतियों को अलग रखते हुए काम किया और सही उत्तर तक पहुँचा।

इस उदाहरण से देखने में आया कि जब विद्यार्थी एक दूसरे को गिनते हुए देख रहे थे तो वे अपनी पद्धति को परिष्कृत कर रहे थे। बिना किसी शिक्षक के हस्तक्षेप के वे अपनी त्रुटियों को पहचानकर सही विधि अपनाने लगे। इस उदाहरण में हमने देखा कि पीयर लर्निंग की एक ख़ास विशेषता यह है कि विद्यार्थी नक़ल करने से अधिक सोचने, विश्लेषण और सुधार करने की प्रवृत्ति विकसित करते हैं। बाल मनोविज्ञानी जीन पियाजे (Jean Piaget) ने अपने 'संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त' में बताया कि विद्यार्थी 'समूह में अधिक प्रभावी रूप से सीखते हैं,' क्योंकि वे एक दूसरे से संवाद करते हुए अपनी ग़लतियों को सुधारते हैं। यह समझ पीयर लर्निंग के महत्त्व को वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध करती है।

वस्तुओं के लुढ़कने और खिसकने की समझ

एक अन्य अवलोकन में कक्षा 2 के दो विद्यार्थी कार्यपुस्तिका में दी गई एक सारणी पर काम कर रहे थे। उन्हें यह तय करना था कि कौन-सी वस्तु लुढ़कती है, कौन-सी खिसकती है, और कौन-सी दोनों कर सकती है। उनके बीच संवाद कुछ इस प्रकार हुआ :

ज़ोया : गिलास तो खिसकता है।

सुरजा : नहीं, मेरे हिसाब से हमें दोनों में टिक लगाना चाहिए।

ज़ोया : ऐसे कैसे दोनों में?

सुरजा : (पास रखी पानी की बोतल उठाकर) देखो, जब यह सीधी रखी होती है तो खिसकती है, लेकिन जब यह गिर जाती है तो लुढ़कने लगती है। (यहाँ सुरजा ने गिलास की जगह बोतल का उपयोग करते हुए अपनी बात रखी और ज़ोया ने कोई आपत्ति नहीं की।)

ज़ोया : (ख़ुश होकर) हाँ, सही है!

यह संवाद दर्शाता है कि विद्यार्थी पीयर लर्निंग के ज़रिए न केवल अपने सन्देहों को दूर कर रहे थे, बल्कि एक दूसरे की सोच को विस्तार भी दे रहे थे। शिक्षक की भूमिका यहाँ केवल एक प्रेक्षक की थी, जबकि वास्तविक शिक्षण स्वयं विद्यार्थियों के बीच हो रहा था।

मिलकर सीखना

कक्षा 4 की जयश्री को हिन्दी भाषा पढ़ने में दिक़्क़त थी। वह एक शान्त और चुप रहने वाली लड़की थी। जब उनकी शिक्षिका ने विद्यार्थियों को दो-दो के जोड़े में बैठकर किताब पढ़ने के लिए देनी शुरू की, कुछ ही दिनों में जयश्री की पठन क्षमता बेहतर होने लगी। कक्षा की बातचीत में भी उसने खुलकर भाग लेना शुरू कर दिया। जब जयश्री से पूछा गया कि रौनक के साथ तो तुमने बहुत जल्दी पढ़ना सीख लिया, उसने बताया कि रौनक के सामने ग़लत पढ़ने पर डर नहीं लगता। जो बात मन में आती है रौनक से पूछ लेती हूँ। अकसर देखने में आता है कि किसी बड़े के साथ बात करने में विद्यार्थियों को झिझक महसूस होती है। विद्यार्थी जब अपने सहपाठियों से सीखते हैं, वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, और दूसरों के विचारों को समझना सीखते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

स्कूल ट्रिप

कक्षा 5 के विद्यार्थियों को एक टास्क दिया गया। टास्क में उन्हें स्कूल ट्रिप की योजना बनानी थी। विद्यार्थियों ने जब बातचीत शुरू की तो सबसे पहले यात्रा के लिए साधन तय करने पर चर्चा हुई। अयान बोला, "एक ऑटो में 5 लोग बैठ सकते हैं तो पूरी कक्षा के लिए 6 ऑटो लगेंगे।"

रश्मि (तपाक से) बोली, "केवल हमारी कक्षा ही थोड़ी जाएगी! 8वीं तक के सभी 120 विद्यार्थी ट्रिप पर जा रहे हैं। इतने विद्यार्थियों के लिए तो ऑटो की रेल ही बन जाएगी।"

विक्रम (हँसते हुए) बोला, "फिर तो ट्रेन ही बुला लो।"

अयान ने टोकते हुए कहा, "ट्रेन स्कूल तक थोड़ी आती है।"

चित्र 2 : मिलकर अँगूठे से रंगों की आकृतियाँ बनाते विद्यार्थी

विशाल ने कहा, "तो फिर बस बुला लो।"

सभी को बस का आइडिया ठीक लगा। उन्होंने हिसाब लगाया कि एक बस में 45-50 विद्यार्थी बैठ जाएँगे तो 3 बस का इन्तज़ाम करना होगा।

इस पूरे कार्य में विद्यार्थी अपने अनुभव व समझ के आधार पर तर्क कर रहे थे, और समस्या समाधान के अपने तरीक़े सोचते हुए बता पा रहे थे। हर विद्यार्थी अलग सोचता है, और अलग तरीक़े से समस्याओं का समाधान करता है। जब विद्यार्थी आपस में सीखते हैं तब वे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझते हैं, और अपने ज्ञान को समृद्ध करते हैं।

गिनते हुए जोड़ना

कक्षा 2 के विद्यार्थी जोड़ के सवाल हल कर रहे थे। विनय ने सभी सवालों को हल कर लिया। उसने देखा कि दिलीप अभी भी काम कर रहा है। दिलीप पहले जोड़ की दोनों संख्याओं जितनी लाइनें गिनकर खींचता, और फिर सभी लाइनों को गिनता। यह देखकर विनय ने उसे समझाया, "बार-बार गिनने की क्या ज़रूरत है? ये देख (दिलीप की बनाई एक संख्या की लाइनों की ओर इशारा करते हुए), यह तो तुझे पता ही है न कि कितनी लाइनें हैं, तो बस उसके आगे से गिन ले।" दिलीप ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, "अरे हाँ, ये तो मैंने सोचा ही नहीं!"

जब एक विद्यार्थी दूसरे की ग़लती को पहचानता है, या उसे नई जानकारी देता है तब वह अपने तर्क और सोचने की क्षमता को विकसित करता है। दूसरे विद्यार्थी भी साथी द्वारा बताए तरीक़े को जानकर ख़ुद के तरीक़े से उसकी तुलना कर उसमें बदलाव करते हैं। इस तरह सीखने की प्रक्रिया उन्हें आलोचनात्मक व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है।

कहानी लिखना

कक्षा 3 के विद्यार्थियों को कुछ चित्र देकर कहानी लिखने का काम दिया गया।

नव्या ने कहा, "मुझे लिखना नहीं आता।"

साक्षी बोली, "लिख तो मैं लूँगी, पर लिखें क्या?"

नव्या ने सुझाया, "चित्र में एक आदमी और कुछ बन्दर हैं। इन्हीं की कहानी बनाओ।"

गौरव ने कहा, "हाँ, शायद ये आदमी बन्दरों को डाँट रहा है?"

नव्या बोली, "ये आदमी ज़रूर इस बग़ीचे का मालिक है। ऐसे ही शुरू करते हैं—एक आदमी का बड़ा-सा बग़ीचा था..."

गौरव बोला, "एक दिन एक बन्दर आया और मालिक से पूछा, 'क्या मैं यहाँ रह सकता हूँ?' "

तीनों विद्यार्थी दिए गए चित्रों को देखकर अपने अन्दाज़ लगाते और विचार करते कहानी को आगे बढ़ाने लगे। सभी की अपनी क्षमता थी। इसने समूह को एक बेहतर कहानी लिखने में मदद की। विद्यार्थी आपस में संवाद करते हैं, अपनी बात रखते हैं, और दूसरों की बातें समझते हैं। वे समझते हैं कि एक दूसरे की मदद से मुश्किल कार्य भी आसान हो सकते हैं। उनके लिए यह कौशल पूरे जीवन के लिए उपयोगी होता है।

पीयर लर्निंग को यदि केवल 'होशियार और कमज़ोर विद्यार्थियों का समूह बनाकर, होशियार को सिखाने वाला और कमज़ोर को सीखने वाला' मान लिया जाए तो यह पीयर लर्निंग की संकीर्ण समझ होगी। बजाय इसके, शिक्षक जब पीयर लर्निंग को विद्यार्थियों की सीख को बेहतर बनाने वाली एक आवश्यक और स्वाभाविक शिक्षण पद्धति के रूप में अपनाएँ तब न केवल विद्यार्थियों का सीखना समृद्ध होता है, बल्कि शिक्षक का कार्य भी अधिक सहज हो जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक व्यक्तिगत रूप से अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच बना पाते हैं।

पीयर लर्निंग पद्धति के बेहतर उपयोग के लिए कुछ सुझाव

- समूह बनाते समय विद्यार्थियों की उम्र, रुचि और क्षमताओं का ध्यान रखना ज़रूरी है ताकि समूह कार्य में सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- शिक्षक सरल व स्पष्ट शब्दों में समूह को सौंपे गए कार्य व इसमें विद्यार्थियों की भूमिका के बारे उन्हें बताएँ। इससे काम में स्पष्टता होगी, और सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका बनी रहेगी।
- समूह कार्य में जो विद्यार्थी शामिल नहीं हो रहे हों, उनके कारण को चिह्नित कर समाधान निकालते हुए उन्हें शामिल करने का प्रयास करें।
- पीयर लर्निंग में एक ही तरह की रणनीति के स्थान पर ज़रूरत के अनुसार बदलाव करें।
- विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे समूह कार्य व बातचीत को आवश्यकता पड़ने पर सही दिशा देने में शिक्षक सहयोगी की भूमिका निभाएँ।
- विद्यार्थियों की उम्र और समझ के स्तर के अनुसार गतिविधियों में सरलता या जटिलता तय कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों के टीमवर्क, सहयोग करने की भावना और प्रयासों की सराहना करें। इससे सीखने का वातावरण सकारात्मक बनता है।
- समय-समय पर विद्यार्थियों की भूमिकाएँ बदलें ताकि सभी को नेतृत्व करने और सीखने का अवसर मिले।

निष्कर्ष

पीयर लर्निंग केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के स्वाभाविक सीखने की प्रक्रिया का ही विस्तार है। जब विद्यार्थी आपस में विचार-विमर्श करते हैं तब वे न केवल अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं, बल्कि 'सहयोग, धैर्य, और सहनशीलता' जैसे सामाजिक गुण भी विकसित करते हैं। *एनईपी 2020* एवं *एनसीएफ़-एसई 2023* भी इसे महत्त्व देते हुए कहते है कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक और व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए।

ख़ासतौर से, कक्षा, शिक्षक और अभिभावक प्रयास करें कि विद्यार्थी खोज करने, प्रयोग करने, और एक दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित हों। इस तरह, सीखना न केवल रोचक बन सकता है, बल्कि अधिक प्रभावी और यादगार भी हो सकता है।

शमीम भाटी साल 2013 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में गणित की सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्हें विद्यार्थियों के साथ समय गुज़ारना, उनसे बातचीत करना अच्छा लगता है। वर्तमान में वे जयपुर, राजस्थान में गणित विषय पर कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : shamim.bhati@azimpremjifoundation.org